

विचार बिन्दु

इस विश्व में स्वर्ण, गाय और पृथ्वी का दान देने वाले सुलभ हैं लेकिन प्राणियों को अभयदान देने वाले इन्सान दुर्लभ हैं। -भर्तृहरि

वासंतिक पंचकर्म से उत्तम स्वास्थ्य

कम से कम पांच हजार वर्ष पूर्व का एक गहन विचार-विमर्श है, जो भारत के दो धुरंधर आयुर्वेदाचार्यों के मध्य हो रहा था। देखिये: हे भगवन्! निश्चित ही आपने सभी रोगों की चिकित्सा के रूप में पूरे पंचकर्म या इसके अलग-अलग घटकों को कहा है। लेकिन, हे चिकित्सक श्रेष्ठ! क्या ऐसा कोई रोग है जो चिकित्सा से तो साध्य है, पर पंचकर्म से ठीक नहीं होता हो? -अग्निवेश ने अपने महान गुरु आत्रेय से पूछा। हाँ, है। ऊरुस्तम्भ। -आत्रेय का उत्तर था।

यहां दो स्पष्ट संदेश हैं। ऊरुस्तम्भ के बारे में तो उत्तर स्पष्ट ही है और उस पर हम कभी और चर्चा करेंगे। पर अग्निवेश और आत्रेय की इस चर्चा में एक गहरा संदेश तमाम रोगों के विरुद्ध पंचकर्म और इसकी घटक क्रियाओं की विशाल प्रयोज्यता और उपयोगिता के बारे में है। जब रोगों के उपचार या स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की बात आती है, तो आयुर्वेदिक पंचकर्म के टक्कर की और कोई विधि नहीं है। सभ्यताओं के विनाश काल में भी, अगर आदमी मीत के मुंह में जाने का काम ही न कर रहा हो, तो पंचकर्म सबसे दुरुस्त चिकित्सा है (च.वि.3.13): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चिवर्षं तेषां भेषजं परमुच्यते।

वसंत ऋतु आने वाली है। और यह समय होगा जब आप पंचकर्म या ऋतुचर्या के अनुसार कम से कम पंचकर्म का एक घटक-वमन-के प्रयोग के बारे में सोच सकते हैं। इस पर आगे चर्चा करते हैं। आइये वसंत के कुछ लक्षण देखते हैं। हेमन्त तथा शिशिर ऋतु में शरीर में संचित कफ, वसन्त ऋतु में सूर्य की गर्मी से कुपित होकर, जातरागिन को बाधित करता है। जिसके कारण उनके कफज व्याधियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। अतः कफ को निकालने के लिए वसन्त ऋतु में शिरोविरेचन, वमन, कवल-धारण आदि का प्रयोग करना स्वास्थ्य के लिये लाभकारी रहता है। इसके साथ ही उबटन, गुनगुने पानी का प्रयोग, उद्यानों एवं वनों में घूमना, पैदल चलना तथा शारीरिक व्यायाम भी बसन्ती-ऋतुचर्या के उपयोगी आयाम हैं। पुष्पित पल्लवित वनों में इनका अनुभव लेना चाहिये।

वसन्त ऋतु में बहुत मीठा, स्निग्ध, अम्ल, देर से पचने वाले गुरु आहार तथा दिन में सोना ठीक नहीं रहता। इसका मूल कारण यह है कि हेमन्त और शिशिर ऋतु में संचित कफ अपने आप में एक समस्या है, और यदि कफ वृद्धि करने वाले ये सभी कार्य किये जायें तो आगे चलकर बीमार होने की आशंका रहती है।

वसन्त ऋतु में खाद्य पदार्थ के रूप में सबसे उत्तम जौ, गेहूँ, शहद, ईख, अंगूर आदि उत्तम हैं। अंगूर या महुवा से बने हुये स्वच्छ औषधीय-आसव व अरिष्ट वसन्त ऋतु में लिये जा सकते हैं। साठी के चावल, शीत द्रव्य, मूंग, निवारी के चावल, कोदो तथा मूंग की दाल के सूप, बैंगन, पटोल आदि तिक्त रस वाले द्रव्यों का उपयोग उत्तम रहता है। वसन्त ऋतु में तीक्ष्ण, रुक्ष, कटु, क्षार, कषाय रस वाले पदार्थों में जौ, मूंग और मधु मिलाकर भोजन के रूप में लेना उपयोगी है।

आयुर्वेद में वसन्त ऋतुचर्या का बड़ा रोचक वर्णन है जो आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्ण साम्यता रखता है। वनों और कानन में जहां टण्डी हवा, जल से भरे हुये तालाब, विविध प्रकार की जैव-विविधता वाले पुष्प-वृक्षों की प्रजातियाँ एवं विविध प्रजातियों के पक्षियों की कलवन्धन हो, वहां समय विताने के लिये वसन्त ऋतु सर्वोत्तम है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में उपवन, ग्रीन स्पेस, पार्क्स या गार्डन्स के स्वास्थ्योपयोगी प्रभाव पर पूरी दुनिया में बहुत शोध हुये हैं। परन्तु प्राकृतिक-तन्त्रों, वनों एवं जैव विविधता क्षेत्रों में स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव पर सबसे महत्वपूर्ण और प्राचीन निष्कर्ष चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता और अष्टांगहृदय में ही उपलब्ध हैं। इस विषय में आधुनिक शोध का इतिहास बहुत पुराना नहीं है परन्तु जो कुछ भी उपलब्ध है उससे आयुर्वेद में दी गयी सलाह की पुष्टि ही होती है। अतः वसन्त ऋतु में प्राकृतिक स्थलों का आनंद लेना स्वास्थ्यवर्धक है।

जहाँ तक पंचकर्म का प्रश्न है, क्या आपको सचमुच इसकी जरूरत है? इसका दुरुस्त आंकलन आपके आयुर्वेदाचार्य आपके लिये कर सकते हैं। लगभग पांच वर्ष पूर्व एक माह से अधिक समय तक चलने वाली पंचकर्म चिकित्सा का आनंद मैंने लिया था। हाल ही में चक्रार्णव आयुर्वेदा जयपुर में लम्बे समय के कार्यरत आयुर्वेदाचार्य डॉ. लक्ष्मी अनूप, जिन्हें आयुर्वेद की उत्तर-भारतीय और दक्षिण-भारतीय विधाओं की गहरी समझ है, और उनकी टीम के साथ विचार-विमर्श हुआ। इस गहन परामर्श से मुझे पुनः लगा कि मैं भी उस श्रेणी में अपने आपको गिन सकता हूँ जिन्हें पंचकर्म से स्वास्थ्य को यथावत बनाये रखने और उग्र-आधारित रोग-जनन को दूर रखने में मदद मिलेगी। मेरी तरह आप भी उनमें से एक हो सकते हैं।

पंचकर्म वैसे तो शारीरिक-मानसिक शोधन और रोग शमन दोनों में मददगार है, पर पहली बात यह है कि आप सबकी तरह मैं भी निरंतर स्वस्थ रहना चाहता हूँ। अन्य शब्दों में, मैं बार-बार बीमार होकर दवाओं में अपना धन नष्ट नहीं करना चाहता। बीमारी में धन की बर्बादी के साथ जो शारीरिक-मानसिक पचड़ा-परेशानी होती है वह तो अतिरिक्त है। अतः सदैव स्वस्थ बने रहने के लिये साल में एक बार पंचकर्म करना सबसे उपयुक्त है।

दूसरी बात यह है कि सघन चिकित्सा इकाई में कोई नहीं मरना चाहता। मैं भी नहीं। दीर्घ-काल तक, या कहिये जीवन के अंतिम दिन तक, स्वस्थ रहना है तो आयुर्वेद के रसायन बड़ी मदद करते हैं। पर बिना शोधन क्रिया करायें रसायनों को लेने का मतलब वैसा ही है जैसा पुराने कम्बल को रंगना। रसायन उग्र-आधारित रोग-जनन रोकने या दर्द-निवारण में तभी सक्षम होते हैं जब पहले पंचकर्म से शोधन कराया जाये। नियमानुसार पंचकर्म, रसायन और वाजीकरण का प्रयोग करने से धातुसाम्य बना रहता है, रोग नहीं होते, धातुयें बढ़ती हैं इसलिये बूढ़े होने की गति धीमी हो जाती है (च.सू.7.48-49): यथाक्रमं यथायोग्यमत ऊर्ध्वं प्रयोजयेत्। रसायनानि सिद्धानि वृष्ययोगांश्च कालवित्। रोगास्तथा न जान्यन्ते प्रकृतिस्थेषु धातुषु धातवश्चापिर्वर्धन्ते जरा मान्द्यमुपैत च।।

तीसरी बात यह है कि वैसे तो पंचकर्म की कुछ क्रियायें दिनचर्या और ऋतुचर्या का अंग हैं, पर हम प्रायः उन्हें भुला देते हैं। जीवन भगदड़ हो गया है। जीवनशैली त्रिदोष-भड़काऊ हो गयी है। प्रज्ञापराध और असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग हमारी आहत हो गये हैं। हमारा समय त्रिदोष-भड़काऊ काल है। ऐसी स्थिति में अनेक रोगों की रोगों की शुरुआती अवस्था दिखने लगती है, तब होश आता है कि पंचकर्म तो हमारे लिये ही है।

ऋतुचर्या में पंचकर्म की क्रियायें तो उपयोगी हैं ही, पर साथ ही आयुर्वेद का सिद्धांत यह है कि बहुदोष के लक्षण दिखें तो समझिये पंचकर्म की जरूरत आ पड़ी। या तो बीमार होइये या पंचकर्म कराइये और स्वस्थ रहिये। तात्पर्य यह समझिये कि अपच, आहार-अरुचि, मोटापा, पांडुता, भारीपन, थकावट, पिडका कोठ और कंठ (तरह तरह की फुंसियाँ), स्तम्भ, अरति, आलस, श्रम, कमजोरी, शारीरिक दुर्गन्ध, अवसाद, कफ व पित्त का भड़कना (उत्कलेश), नौद उड़ जाना या खूब नौद आना, तन्द्रा (उनीदापन या हमेशा औंधाते रहना), क्लेश, अबुद्धि की स्थिति, उल्टे-पुल्टे सपने आना, और पौष्टिक आहार लेते रहने के बावजूद बाल और रंग उड़ना बहुदोष के लक्षण हैं। ऐसे लोगों के लिये पंचकर्म या संशोधन हितकारी होता है। अनुभवों और कुशल चिकित्सक रोगी के दोष स्थिति वचल को समझकर चिकित्सा की सलाह देगा व शोधन करायेंगा (च.सू.16.13-16): अविपाकोऽरुचिः स्थौल्यं पाण्डुता गौरवं क्लमः। पिडकाकोठकण्डूनां सम्भवोऽरतिरेच च। आलस्यश्रमदोर्बल्यं दौर्गन्ध्यमवसादकः। श्लेष्मपित्तसमुत्कलेशो निद्रानाशोऽतिनिद्रता। तन्द्रा क्लेश्यमबुद्धित्वमशस्तस्वल्पदर्शनम्। बलवर्णप्रणाशश्च तृत्यो बृंहणैरपि। बहुदोषस्य लिङ्गानि तस्मै संशोधनं हितम्। ऊर्ध्वं चैवानुलोमं च यथादोषं यथाबलम्।।

एक और सिद्धांत है। मेरे विचार से जीवन और मृत्यु के मध्य सात रक्षा दीवारें हैं: आहार, विहार, सद्गत, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन/वाजीकरण, औषधि। इनमें से शुरू की छः दीवारें स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य-रक्षण में मदद करती हैं। और सभी सात दीवारें या सुरक्षा कवच मिलकर रोगी को स्वस्थ करने में मदद करती हैं। जब आहार, विहार, सद्गत वस्वस्थवृत्त की सुरक्षा दीवार को ठीक से प्रतिदिन न सन्हाला गया हो तो पंचकर्म की जरूरत पड़ जाती है। इसके बाद, जीवन और मृत्यु के बीच रसायन और औषधि की दीवारें ही शेष बचती हैं।

जहाँ तक पंचकर्म में अभी तक प्रकाशित शोध का प्रश्न है, शोधकर्ताओं को पंचकर्म की समग्रता में शोध करना होगा। अभी प्रायः जो शोध हो रही है उसमें पंचकर्म की समग्रता और अखंडता की उपेक्षा ही दिखाई पड़ती है। पंचकर्म पर वैज्ञानिक अनुसंधान हेतु ऐसी विधियाँ अभी तक विकसित नहीं हो पायी हैं, जिनका उपयोग कर पंचकर्म के सभी पहलुओं की विविधता और प्रत्येक पहलु के क्रियावन्धन को समाहित कर वाञ्छित प्रश्नों के निर्विवाद उत्तर प्राप्त किये जा सकें। इसके बावजूद अभी तक जो शोध है वह निर्विवाद रूप से रोगों के उपचार और स्वास्थ्यरक्षण में पंचकर्म की उपयोगिता यथावत सिद्ध करती है। संहिताओं, सांस्कृतिक और अनुभव में कोई विरोधाभासी प्रमाण नहीं मिलते।

अंत में एक 5000 साल पहले हुये गुरु-शिष्य संवाद का एक रोचक दृष्टांत पुनः देखते हैं। अग्निवेश ने पूछा: "भगवन्! क्या लोगों की आयु निश्चित होती है या नहीं?" (किन्तु खलु भगवन्! नियतकालप्रमाणायुः सर्वं न ति)। आत्रेय का उत्तर था: "अग्निवेश! समस्त प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा करती है" (इहानिवेशे। भूतानामायुर्व्युक्तिमपेक्षते)। हम सबके लिये सन्देश यह है कि जल, वायु, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषण काल में भी मृत्यु की तिथि तय नहीं है। आयु युक्ति की अपेक्षा करती है। युक्ति से आप स्वस्थ रह सकते हैं। युक्ति से आपकी आयु बढ़ाई जा सकती है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

मुस्लिम आक्रान्ताओं के विरोध में गुर्जरों की भूमिका महत्वपूर्ण रही : जसबीर सिंह

अजमेर, (कासं)। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय में शनिवार को पृथ्वीराज चौहान ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक शोध केन्द्र व अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में इतिहास में गुर्जर समाज पुनरावलोकन विषय पर आधारित दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष सरदार जसबीर सिंह ने कहा कि देश की विभिन्न जातियों व गुर्जर समाज के इतिहास को जानने के लिए भारत के गौरवशाली इतिहास का पुनरावलोकन जरूरी है।

जसबीर सिंह ने कहा कि मुस्लिम आक्रान्ताओं के विरोध में गुर्जर समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। गुर्जर समाज का आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के बीच लगभग 288 वर्षों का साम्राज्य रहा था। 1857 की क्रांति में भी गुर्जरों का बलिदान इतिहास में अविस्मरणीय रहा है। भारत की जीवनशैली, संस्कृति व सामाजिक व्यवस्था विश्व में अद्वितीय है। यह देश के लिए गौरव का विषय है कि विश्व के मुख्य 9 में से 6 धर्मों का अधिभाव भारत में हुआ है। उन्होंने कहा कि जातियों के इतिहास से ही संस्कृति व मूल्यों को पुष्टा जानकारी



अजमेर में इतिहास में गुर्जर समाज पुनरावलोकन विषय पर आधारित संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

हासिल हो सकती है।

उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. विभा उपाध्याय ने कहा कि भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की परम्परा पर रही है। हमारी संस्कृति पर इस्लाम व ईसायत ने अनेक प्रहार किए हैं। हमें इस सद्मे से उभरकर जीवन मूल्यों की खोज करनी पड़ेगी। गुर्जर प्रतिहार साम्राज्यवादी शासक रहे हैं। गुर्जर विशुद्ध आर्य थे। कला व

साहित्य की विरासत में भी गुर्जर समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह इतिहासकारों का दायित्व है कि वे जातियों के इतिहास को सच्चाई व ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करें। सत्र की अध्यक्षता करते हुए मदस विवि के कुलपति प्रो. भगीरथ सिंह ने कहा कि मूल्य एवं संस्कृति हमारे समाज में महत्वपूर्ण हैं। गुर्जरों के इतिहास को सही रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया है। इतिहासकार उपेक्षित व पिछड़े जातियों के इतिहास लेखन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करें ताकि भावी पाढ़ी को

सही मार्गदर्शन मिल सके। अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान के सचिव कैलाश चन्द्र गुर्जर ने सत्र के समापन पर आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष अतिथि द्वारा दो प्रज्वलन के साथ हुआ। सत्र का संचालन डॉ. एन.के. उपाध्याय ने किया।

प्रथम दिन तीन तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। प्रथम तकनीकी सत्र गुर्जरों की उत्पत्ति के विभिन्न मत एवं भौगोलिक विस्तार पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता मोहनलाल



■ मूल्यों के पुनः सर्जन के लिए इतिहास का पुनरावलोकन जरूरी
■ महर्षि दयानन्द सरस्वती विवि. में हुई संगोष्ठी

सुखाडिया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे.पी. शर्मा ने की तथा मुख्य वक्ता राजकीय के.आर.जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय ग्वालियर की डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ रही।

सह सत्राध्यक्ष प्रो. आर.पी.पाण्डे जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर थे। इस सत्र में तीन शोधार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए। द्वितीय तकनीकी सत्र गुर्जर समाज का सामाजिक व सांस्कृतिक इतिहास आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. जसबीर सिंह ने की तथा मुख्य वक्ता राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय झालावाड़ की डॉ. सज्जन पोषवाल थी। सह सत्राध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय के आर.के.गुर्जर थे। इस सत्र में चार शोधार्थियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

केन्द्रीय टीम ने जालोर नगरपरिषद को ओडीएफ घोषित करने से किया मना

जालोर, (कासं)। स्वच्छता अभियान को लेकर जालोर पहुंची केन्द्रीय टीम के सदस्यों की गंदगी के ढेर नजर आने पर टीम ने जालोर नगरपरिषद को ओडीएफ घोषित होने से नकार दिया। जानकारी के अनुसार स्वच्छता सर्वेक्षण 2018 को लेकर विगत दो दिन से केन्द्रीय टीम जालोर नगरपरिषद पहुंचकर स्वच्छता की जांच करने में लगी हुई। जालोर में स्वच्छता अभियान के केन्द्रीय दल में कावेरी डाटा मैनेजमेंट के सीनियर एसएसआर महेन्द्र कुमार मेघवाल व जूनियर एसएसआर लेखाराम डांगी ने जालोर नगरपरिषद की ओर से स्वच्छता को लेकर किये गये दस्तावेज की जांच की गई। टीम ने शनिवार को दस्तावेज के बाद फील्ड भ्रमण कर स्वच्छता की जानकारी धरातल पर जुटाने का प्रयास किया। केन्द्रीय टीम ने शनिवार को नगरपरिषद के वार्ड संख्या 14,15,18 व 20 का भ्रमण कर शौचालय निर्माण व स्वच्छता के तहत किये गये कार्यों को परखा। लेकिन इन वार्डों में भी आशा अनुरूप



■ टीम को गंदगी के ढेर आये नजर
■ शौचालयों का निर्माण भी दिखा अधूरा

कार्य नहीं होने पर केन्द्रीय टीम ने उम्मीद से कम स्वच्छता की बात कही। उन्होंने कहा कि कई जगह अभी शौचालय निर्माण होना है तथा कई जगह शौचालय निर्माण का कार्य अधूरा है। इसके अलावा कई जगह गंदगी देखकर भी केन्द्रीय टीम ने सुधार की बात कही। वहीं शहर में पब्लिक शौचालयों की कमी पाई गई। केन्द्रीय टीम ने शहर में पब्लिक शौचालय व कम्प्यूनिटी टॉयलेट निर्माण करवाने की बात आयुक्त को बताई। केन्द्रीय टीम ने परिषद के कार्य को आशा अनुरूप नहीं बताया। वहीं कहा कि स्वच्छता को लेकर वे कुछ नहीं कह सकते हैं। आगे से जैसे निर्देश मिलेगा।

वैसे ही कार्यवाही होगी।

स्वच्छता को लेकर कुछ हद तक शहरवासी भी जिम्मेदार हैं, लेकिन ओडीएफ के मामले में केन्द्रीय टीम हरी झण्डी नहीं देगी। जालोर शहर के सुन्देलाव तालाब, एफसीआई गोदाम, गोडीजी क्षेत्र, लाल पोल, किले की घाटी सहित कई जगह आज भी खुले में शौच करते लोग नजर आ सकते हैं। ऐसे में स्वच्छता का नारा गौण नजर आ रहा है। वहीं शहर में कई जगह सिवरेज का पानी सड़कों पर बहात नजर आता है। ऐसे में लोगों को आने-जाने में परेशानी होती है। वहीं शहर में सर्वेक्षण टीम आने के बाद नगरपरिषद ने हाथों हाथ जगह-जगह काफ़ी कचरा पात्र लगाए हैं। लेकिन ये कचरा पात्र भी शहर में शौ पीस बने हुए हैं। सिर्फ सर्वेक्षण टीम को बताने के लिए कचरा पात्र शहर में नजर आ रहे हैं। आज भी शहर में कई जगह पर व्यवस्थाएं बदहाल हैं। शहर में कई स्थानों पर पसरी गंदगी से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। केन्द्रीय टीम के समक्ष कई पार्षदों

ने बताया कि उनकी बिना जानकारी के उनके वार्ड को ओडीएफ घोषित कर दिये जा चुके हैं। ऐसे में कई पार्षदों ने बताया कि शौचालय निर्माण की राशि भी नहीं मिली। ऐसे में लोग घरों में शौचालय का निर्माण कैसे करें। केन्द्रीय टीम ने वर्तमान आयुक्त सौरभ कुमार जिन्दल की प्रशंसा करते हुए कहा कि उम्मीद से कम है।

केन्द्रीय टीम के सीनियर एसएसआर महेन्द्र कुमार मेघवाल ने बताया कि जालोर शहर के चार पांच वार्डों में जाकर भौतिक सत्यापन किया है। अभी कुछ भी नहीं कह सकते हैं। लेकिन स्वच्छता का कार्य उम्मीद से कम है। उन्होंने बताया कि नगरपरिषद को ओडीएफ घोषित नहीं किया जा सकता है। क्योंकि कई जगह शौचालय निर्माण नहीं होने की शिकायत मिली है। वहीं कई जगह सफाई नियमित नहीं होने की शिकायत मिली है। शनिवार को सुन्देलाव तालाब, एफसीआई गोदाम क्षेत्र का भ्रमण का स्वच्छता की जानकारी जुटाई जायेगी।

धोलिया गांव में मिला दुर्लभ मृत पक्षी

रामदेवरा, (निसं)। रामदेवरा स्थित लाठी क्षेत्र के धोलिया गांव में शनिवार को एक खेत में जहां एक दुर्लभ प्रजाति के पक्षी का मृत शव मिला, वहीं रेलवे ट्रैक के पास किसी पक्षी या जीव को जलाये जाने के बाद वन विभाग को उसकी हड्डियां मिलीं। दोनों ही मामलों में वन विभाग लाठी की ओर से कार्यवाही प्रारंभ कर दी गई। जानकारी के अनुसार धोलिया गांव के पास एक खेत में दुर्लभ प्रजाति के एक पक्षी के शव पड़े होने की जानकारी वन विभाग के लाठी विभाग को मिलने पर क्षेत्रीय वन अधिकारी प्रकाशसिंह अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और दुर्लभ प्रजाति के मृत वन्य जीव को कब्जे में लेकर लाठी रैस्क्यू सेंटर लाकर शव के पोस्टमार्टम की कार्यवाही प्रारंभ कराई गई। देर शाम तक वन विभाग के अधिकारी दुर्लभ प्रजाति के पक्षी की पहचान नहीं कर सके, जबकि दुर्लभ प्रजाति का पक्षी गिद्ध की तरह दिखाई दे रहा है।

क्षेत्रीय वन अधिकारी लाठी प्रकाश सिंह ने बताया कि शनिवार को दो घटनाक्रम सामने आये हैं। दोनों में ही उचित कार्यवाही प्रारंभ कर दी गई है।

ज़नवाणी

बैंकों की यह खुली लूट सरेआम जारी

कई सरकारी व निजी क्षेत्रों के बैंकों ने जनता को लूटने के अपने-अपने हिसाब से नियम बना लिए हैं। जिसके अंतर्गत बैंक से तीन बार मासिक लेन-देन से ज्यादा करने पर चार्ज लगेगा या एटीएम से ज्यादा बार पैसा निकालने पर भी खाते से राशि कट जयेगी। ये कैसी खुली लूट सरेआम कर रहे बैंकों को दे रखी है। बैंक आज प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यक सेवा में शुमार है। बाहर पढ़ने वाले विद्यार्थी, हॉस्टल में रहने वाले विद्यार्थी अपनी जरूरत के मुताबिक पैसे निकालते हैं।

कईयों की पैसे-आजकल चैक द्वारा की जा रही है, अतः मजबूरन बैंक एकाउन्ट रखना पड़ता है। पर बैंकों की यह खुली लूट सरेआम जारी है। इसके बावजूद भी आप दिन बैंकों की हड़तालें होती रहती हैं। उनके अधिभावक भी जरूरत के अनुसार ही राशि खाते में डाल देते हैं। इससे विद्यार्थी पर भार पड़ता है। वैसे ही अधिभावक अपनी खून-पसीने की कमाई बचा-बचा कर बच्चे को बाहर भेजते हैं। व्यापार करने वाले लाखों का लेन-देन रोकते हैं। घर-गृहस्थी वाले भी सुरक्षा कारणों से अपने घर ज्यादा राशि नहीं रखते हैं। और जब सरकार वैसे ही आयकर लेती है तो फिर ये कैसी मनमानी।

-लता अग्रवाल, चित्तौड़गढ़ (राज.)

राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

रविवार 4 फरवरी, 2018

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2074, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, सुकर्मा योग, बालव करण, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृश्चिक, बुध-मकर, गुरु-तुला, शुक-मकर, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में।

आज उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र प्रातः 8:22 तक, सुकर्मा योग दिन 1:57 तक है। इसके पश्चात हस्त नक्षत्र, धृति योग, कौलव करण आरम्भ होगा।

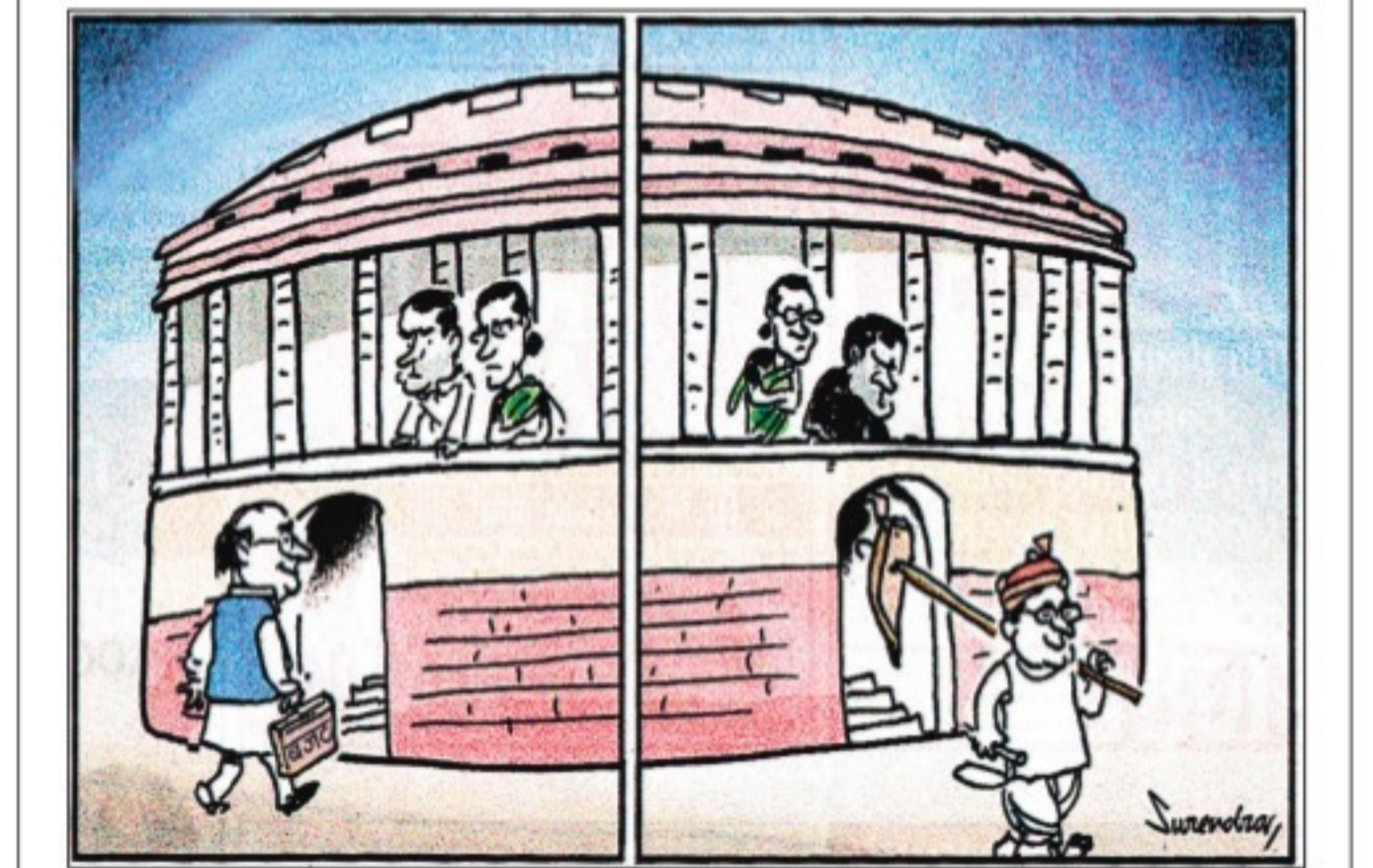
आज सर्वाथ सिद्धि योग सूर्योदय से संपूर्ण दिन-रात रहेगा।

आज ब्रज महोत्सव पूर्ण होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:36 से 9:58 तक, लाभ-अमृत 9:58 से 12:41 तक, शुभ 2:02 से 3:24 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

कार्टूनी नज़रिया



हिंदू से साभार

मेघ	सिंह	धनु
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेगे। अनहोनी की आशंका से बचा हुआ मन का भय समाप्त होगा। दिनचर्या में सुधार होगा।	आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं।	अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
वृष	कन्या	मकर
शुभ कार्यों में परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।	मन:स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेगे।	शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। मानसिक तनाव अभी बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।
मिथुन	तुला	कुंभ
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। पारिवारिक कारणों से भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।	आवश्यक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। परिवार में आपसी अनबन बढ़ने का भय है।	चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।
कर्क	वृश्चिक	मीन
नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।	आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी और अटक हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यक्तिगत प्रयासों से महत्वपूर्ण कार्य में उचित सफलता मिल सकती है।	घर/परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल बना रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बनेंगे। आयुष्म सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।